International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 20-09-2020; Accepted: 05-10-2020; Published: 21-10-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 5; 2020; Page No. 119-122

प्रवासी साहित्यः परिभाषा व अवधारणा

मुलायम सिंह

पीएच.डी, भारतीय भाषा केंद्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, भारत

प्रस्तावना

प्रवासी की अवधारणा एवं पहचान को लेकर जो विमर्श सामाजिक विज्ञान के अध्ययन क्षेत्र में जारी है उसी का प्रतिरूप कमोबेश प्रवासी साहित्य की परिभाषा एवं अवधारणा को लेकर साहित्य जगत के अंतर्गत भी दिखाई देता है। जब सवाल यह उठता है कि प्रवासी साहित्य किसे कहे? प्रवासी साहित्य की ऐसी क्या विशेष पहचान है जो उसे किसी भाषा के साहित्य से अलग एक प्रवासी साहित्य की संज्ञा दी गई? किन लेखकों के साहित्य को प्रवासी साहित्य माना जाए? और किन लेखकों के साहित्य को नही? प्रवासी लेखक या साहित्य कहलाने के क्या मानदंड हैं? क्या प्रवासी साहित्य; किसी भाषा के मुख्यधारा के साहित्य के अंतर्गत ही समाहित है? या इसकी कोई एक अलग साहित्य धारा है? क्या देश बदल लेने पर उस लेखक को विदेशी लेखक माना जाएगा या उसी देश का? माना कि कोई लेखक भारत छोड़कर अमेरिका में बस गया हो तो क्या उसे भारतीय लेखक माना जाए या फिर अमेरिकी? प्रवासी साहित्य को परिभाषित एवं मूल्यांकित करते हुए उपरोक्त सवालों के बीच से गुजरना आवश्यक है। बेद प्रसाद गिरि अपने एक लेख जिसका शीर्षक *'दि लिटरेचर ऑफ द इंडियन डायस्पोराः बिटविन थ्योरी एंड अर्काइव'* के माध्यम से प्रवासी साहित्य का विश्लेषण करते हुए यह प्रश्न खड़ा करते हैं कि प्रवासी साहित्य को एक सिद्धांत के रूप में समझा जाये? या इसे महज लेख-संग्रह समझा जाये? आगे अपने इस लेख में वो वी.एस. नायपॉल, सलमान रश्दी, रोहिंतन मिस्त्री, भारती मुखर्जी, अमिताभ घोष, झुंपा लहरी, अनीता देसाई, एम.जी. वसंजी, श्याम सेल्वादोरई आर किरन देसाई जैसे प्रवासी लेखकों की बढ़ती हुई प्रसिद्धि को बताते हुए प्रवासी साहित्य के विकास को उत्तर उपनिवेशी आलोचनाओं के प्रसिद्धि के साथ-साथ देखते हैं।[1]

अमित शंकर साहा ने अपने लेख *'एक्जाइल लिटरेचर एंड द डायस्पोरिक इंडियन राइटर'* में प्रवासी साहित्य का विश्लेषण करते हुए उसके दो रूपों को रेखांकित करते हैं तथा उनके बीच के अंतर को भी स्पष्ट करने की कोशिश करते हैं। प्रवासी साहित्य के पहले रूप को परिभाषित करते हुए वो उसे निर्वासित साहित्य (Exile Literature) बताते हैं। जिसमें वो रशियन लेखक मैक्सिम गोर्की व सोल्जहेनित्सिन (Solzhenitsyn) का जिक्र करते हैं जो किसी दमनकारी शासन के कारणभूत विवशता स्वरूप एक राजनीतिक निर्वासन का भुक्तभोगी हुए। ऐसे निर्वासन की अवस्था में उपजे साहित्य को निर्वासित साहित्य का नाम सुझाते हैं। हालांकि दोनों तरह के साहित्य में स्थानांतरण की पीड़ा एक मुख्य केंद्र बिंदु है और इसी से प्रेरित होकर रचित साहित्य को मुख्यतः प्रवासी साहित्य के दूसरे रूप में चित्रित करते हैं। इनके अनुसार प्रवासी साहित्य के लेखन में स्थानांतरण के कारण को केवल भौगोलिक अर्थो में न देखकर उसे अन्य सामाजिक-सांस्कृतिक परिस्थितियों से जोड़कर देखने पर बल दिया गया है। ये प्रवासी साहित्य, प्रवासन, शरणार्थी तथा प्रवासन के कारणों को केवल स्वयं के अनुभवों से जुड़ी समस्या न मानकर वरन उसे वैश्विक परिप्रेक्ष्य में देखते हैं।[2]

भारतीय उच्चायोग, लंदन में पूर्व सांस्कृकिक अताशे (Attache) डॉ. राकेश बी. दुबे अपने एक लेख *'हिंदी और प्रवासी भारतीय'* प्रवासी को परिभाषित करने

के क्रम कुछ मूलभूत सवालों को उठाते हैं। वो लिखते हैं कि - प्रवासी है कौन ? कितनी अवधि तक प्रवास करने पर किसी व्यक्ति को प्रवासी की श्रेणी में रखा जाएगा? पहले-पहल उन्नीसवीं सदी में अर्थात् 1834 में मॉरीशस में उतरे पहले प्रवासी भारतीय से लेकर बीसवीं शताब्दी में 1920-21 तक शर्तबन्दी प्रथा के अंतर्गत अर्थात् गिरमिटिया मजदूरों के रूप में मॉरीशस, त्रिनिदाद, दक्षिण अफ्रीका, गयाना, फिजी, सूरीनाम आदि में गए भारतीय भी प्रवासी कहे जाते हैं और वर्तमान में रोजगार, शिक्षा एवं प्रवर्जन पर जाने वाले भारतीय भी प्रवासी कहे जा रहे हैं । लगभग 177 वर्ष पहले से लेकर लगभग 90 वर्ष पूर्व तक भारत से गए लोगों की तीसरी नहीं तो चौथी पीढ़ी उन देशों में रह रही है, उनका जन्म, पालन पोषण, शिक्षा-दीक्षा वहीं हुई है; ऐसे में क्या उन्हें भी प्रवासी माना जाए? इसके विपरीत आधुनिक यूरोप, दक्षिण पूर्व एशिया और अमेरिका में पिछले 50 वर्ष के दौरान रोजगार, पढ़ाई, व्यापार आदि के लिए गए प्रवासियों को भी क्या उसी श्रेणी में रखा जाना उचित होगा? उपरोक्त सवालों के जवाब स्वरूप वो यह उपाय सुझाते हैं कि ''इन सभी लोगों का भारत से जुड़ाव को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि प्रवासी भारतीयों की हमारी संकल्पना उन भारतवंशियों की है जो किन्ही कारणों से विदेश में कुछ काल के लिए या फिर सदैव के लिए बस तो गए हैं लेकिन उनका भारत से सम्पर्क समाप्त नहीं हुआ है।''[3]

अपने एक लेख में स्वर्णलता ठन्ना लिखती हैं कि ''प्रवास शब्द उन लोगों के लिए प्रयुक्त हुआ है जो शौक या मजबूरी वश दूर देशों में बसा दिए गये थे या वे स्वयं रोजगार की तलाश में अन्य देशों की यात्रा पर निकल गए और वहीं बस गए। इन लोगों ने अपने परिश्रम से वहाँ की आबादी में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई और अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए स्वयं को सक्षम बनाया। इस सक्षमता से पहले प्रवासियों को अनेक बाधाओं का सामना करना पड़ा। क्योंकि ये लोग गुलाम के रूप में वहाँ ले जाये गये थे, इसलिए इन्हें आर्थिक संकटों के साथ-साथ अपनी धरती, अपने घर-परिवार से दूरी, शारीरिक और मानसिक गुलामी और बेगानापन झेलना पड़ा। उन्हीं में से कुछ लोगों ने अपनी व्यथा-कथा को कलमबद्ध कर प्रवासी साहित्य की नींव रखने का कार्य किया।''[4]

'प्रवासी दुनिया.काम' में छपे एक लेख में विशेष रूप से हिंदी साहित्य के संदर्भ में प्रवासी साहित्य को परिभाषित करने के क्रम मे लिखा गया है कि 'प्रवासी' विशेषण एक विशेष प्रकार की स्थानीयता की पहचान है, जो भौगोलिक है। प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन के अवसर पर भारत से बाहर के रचनाकारों को पहली बार इस सम्बोधन से सम्बोधित किया गया था जो उनकी विशेष पहचान का द्योतक था। 'प्रवासी साहित्य' जैसे शब्दों की उद्भावना वहीं हुई थी और उसे अलग से वर्गीकृत कर उसका अलग विश्लेषण करने के पीछे भी मानसिकता आरम्भ में यह रही होगी क्योंकि यह साहित्य एक भिन्न परिवेश से आ रहा है, इसकी शब्दावली, इसकी कथावस्तु, शिल्प, लेखन शैली भिन्न हो सकते हैं इसलिये इसके लिये सीधे-सीधे वे मानदंड नहीं चलेंगे जो भारत में लिखे जा रहे हिन्दी साहित्य पर लागू होते हैं। किन्तु यह हिन्दी साहित्य है और हिन्दी की मुख्यधारा का हिस्सा है, इस बारे में किसी ने शायद ही संशय व्यक्त किया हो।[5]

प्रवासी साहित्य के बारे में भारतीय मूल की प्रवासी लेखिका डॉ. सुषम बेदी लिखती हैं कि ''प्रवासी साहित्य की यात्रा बहुत लंबी है और पड़ाव दूर है, परन्तु इतना सच है कि प्रवासी साहित्य अपनी पहचान यात्रा पर चल चुका है और पड़ाव भी कुछ दिखायी दे रहा है। डॉ. बेदी चाहती हैं कि प्रवासी लेखक गर्वोक्तियों से बचें और आत्मान्वेषण करें, लेकिन भारत के हिन्दी समाज को भी प्रवासी साहित्य के प्रति अपने उपेक्षा भाव को समाप्त करके उसकी आंतरिक शक्ति का अन्वेषण करना होगा, तभी प्रवासी हिन्दी साहित्य की यात्रा अपने लक्ष्य तक पहुंच सकेगी।''[6]

प्रवासी साहित्य के अवधारणात्मक अस्पष्टता के संबंधित एक अन्य लेख *'अस्मिता की खोजः डायस्पोरा के हिंदी लेख'* में लेखिका डॉ. सुषम बेदी प्रवासी साहित्य एवं प्रवासी लेखक से जुड़े कई प्रश्नों को फलक पर रखती हैं। वो कहती है कि क्या भारत से बाहर रह कर भारतीय भाषा में लिखने वाले लेखक भारतीय कहलायेगें या आवासीय देश के?

लेखक की अस्मिता कौन तय करेगा? वह भाषिक समाज जिसमें वो लिखता है या उस देश का समाज जिसमें वो रहता है? क्या अपनाया हुआ देश उसे अपना लेखक मानेगा जबकि उसका पाठक तो छोड़े हुए वतन में हैं? क्या सृजनात्मक लेखन सिर्फ भाषा से जुड़ा हुआ है या फिर समाज, संस्कृति या भूगोल से भी? अक्सर अंग्रेजी में लिखने वाले प्रवासी लेखकों पर यह सवाल उठाया जाता है कि क्या वो अंग्रेजी में लिखते हुए भी भारतीय लेखक हैं? जैसे कि भारती मुखर्जी को अमेरिका के स्कूल-कॉलेजों में भारतीय लेखिका के रूप में पढ़ाया जाता है। अमेरिका से पहले भारती कनेडा की आवासी थी। प्रवासी अंग्रेजी लेखक अंतर्राष्ट्रीय स्थान पा लेने के बाद अपने रिहाइशी देश की पहचान लिए रहते हैं जैसे कि ब्रिटिश अंग्रेजी या अमेरिकी भारतीय आदि। हिंदी में लिखने वाले प्रवासी लेखक की पहचान खुद उसके रिहाइशी देश में नहीं बनती है, अगर वो अपनाए हुए देश में पढ़ा जाता है तो विदेशी लेखक के रूप में। लेखिका अंग्रेजी साहित्य के नए तेवर का जिक्र करते हुए कहती हैं कि भारतीय या हिंदी साहित्य भी नए तेवर के साथ लिखा जाएगा तो उसे मान्यता मिलेगी। आगे सुषम बेदी सवाल उठाती है कि क्या प्रवासी हिंदी लेखक को मान्यता भारत से मिलना चाहिए या अंग्रेजी जगत से? इन सवसे से परे वो सुझाव देती है कि यदि सच में मान्यता पाना है तो हिंदी को वैश्विक स्तर पर खड़ा होकर मुकाबला करना होगा।[7]

प्रवासी साहित्य को मुख्यधारा का साहित्य माना जाए या नही? इस सवाल पर प्रकाश डालते हुए लेखिका मधु अरोड़ा ने अपने एक लेख *'प्रवासी साहित्य और चुनौतियां'* में मुख्यधारा के साहित्य जैसी अवधारणा पर सवाल खड़ा करते हुए कहती है कि क्या मुख्यधारा के लेखन के लिये कोई मानदंड है क्या? जिसकी कसौटी पर लेखन को कसा जाए? आगे वो साहित्य को विविध धाराओं या टुकड़ों में बांटने पर आपत्ति जताते हुए मुख्यधारा के साहित्य को अपने नजरिये से परिभाषित करते हुए कहती हैं कि जो कहानियां मानवीय सरोकार से जुड़ी हों, जिनके लिखने का कुछ मकसद हो, सिर्फ लिखने के लिये न लिखा जा रहा हो। जो कहानियां पाठक को सोंचने के लिए विवश करे, उनके दिलों-दिमाग को उद्वेलित करे, जिन रचनाओं को पढ़कर सामाजिक बदलाव की सकारात्मक सोच उत्पन्न हो सके। ऐसी कहानियों को मैं मुख्यधारा के अंतर्गत मानने के हक में हूँ। चाहे वो कहानियां प्रवासी लेखकों की ही क्यों न हो।[8]

प्रवासी साहित्य की परिभाषा और अवधारणाओं पर उपरोक्त विश्लेषण के तदुपरांत एक बात तो जाहिर है कि प्रवासी साहित्य शब्द उन लेखकों की रचनाओं का द्योतक है जो अपने वतन से दूर किसी दूसरे देश में रहकर सृजन कार्य में संलग्न हैं। इन प्रवासी लेखकों के प्रवास का कारण कभी विवशतावश रहा है तो ज्यादातर स्वतःजन्य। यूरोपीय देशों के प्रवासी लेखक बाद वाले श्रेणी में आते हैं। आलोचकों के आपसी मतभेद के बावजूद हम प्रवासी साहित्य को उस भाषा के मुख्यधारा के साहित्य का ही एक भाग के रूप में समझ सकते हैं। भारतीय भाषा के इन प्रवासी लेखकों का पाठक वर्ग ज्यादातर उनके स्वदेश भूमि से जुड़े होते हैं किंतु भारतीय अंग्रेजी साहित्य के पाठक वर्ग का दायरा काफी व्यापक है। सलमान रश्दी, भारती मुखर्जी, वी.एस. नायपॉल, रोहिंतन मिस्त्री तथा अमिताभ घोष आदि लेखकों को स्वभूमि के साथ-साथ आवासीय भूमि के पाठक वर्ग से भी मान्यता प्राप्त है। इसके बरक्स अन्य भारतीय साहित्य का दायरा सीमित है। लेकिन प्रवासी साहित्य की अवधारणा एवं संकल्पनाओं के दायरे में जो विमर्श अकादमिक जगत में चल रहा है उसे उपर्युक्त संदर्भ में समझा जा सकता है।

संदर्भ सूची

1. Giri, Bed Prasad, (2007), The Literature of the Indian Diaspora: Between Theory and Archive, Diaspora: A Journal of Transnational Studies, Volume 16, Number 1/2, P. 243
2. Saha, Amit Shankar, (2009), Exile Literature and the Diasporic Indian Writer, Rupkatha Journal on Interdisciplinary Studies in Humanities, Volume I, Number 2, P. 186-88.
3. दुबे, डॉ. राकेश, बी(2012), हिंदी और प्रवासी भारतीय, विश्वंभरा , http://vishvambharaa.blogspot.in/2012/09/Hindi-and-NRIs.html

Accessed on 15 May, 2016

4. ठन्ना, स्वर्णलता (दिसंबर,2016) हिंदी के प्रवासी साहित्य की परंपरा,जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका, वर्ष-22, अंक-2
5. प्रवासी दुनिया,(2 अगस्त,2011) http://www.pravasiduniya.com/दूर-देश-के-हिन्दी-लेखकों-क accessed on 06 June, 2017.
6. अग्रवाल, साधना (2011) प्रवासी हिंदी कलम की पीड़ा, दैनिक राष्ट्रीय सहारा, 20 अप्रैल, 2011। http://nukkadh.blogspot.in/2011/02/blog-post_8057.html accessed on 29 May, 2016.
7. बेदी, डॉ. सुषुम (2012) अस्मिता की खोजः डायस्पोरा के हिंदी लेखक, http://www.pravasiduniya.com/wp-content/uploads/2012/03/pravasi-sahitya-ki-asmita-ka-saval.pdf access on 29 May, 2016.
8. अरोड़ा, मधु (2014, जनवरी-मार्च), प्रवासी साहित्य और चुनौतियाँ, प्रवासी संसार, वर्ष-10, अंक-2, पृ. 12।